© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 9 | Print ISSN : 2395-6011 | Online ISSN : 2395-602X

प्रजातंत्र में मीडिया की प्रासंगिकता

*डॉ0 मान सिंह

आधुनिक काल में प्रेस मानव मूल्यों की गरिमा बनाये रखने के लिए तथा मनुष्य के राजनैतिक व सामाजिक अधिकारों की रक्षा करने के लिए एक सशक्त माध्यम है। इंग्लैण्ड के महान वक्ता व दार्शनिक एडमण्ड बर्क ने इसे राष्ट्र का 'चौथा स्तम्भ' कहा है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में कहा जाता है कि हमारी सरकार के तीन स्तम्भ– विधायिका, कार्यपालिका व न्यायपालिका के बाद चौथा स्थान प्रेस है। भारतीय संविधान में यद्यपि इसके लिए कोई अलग से उपबंध या अनुच्छेद नहीं है, फिर भी अनुच्छेद 191(क) वाक् स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार के अन्तर्गत इसे रखा जाता है।

वर्तमान समय में प्रेस वह कड़ी है जो एक देश को सम्पूर्ण विश्व से जोड़ती है। प्रसिद्ध तानाशाह नेपोलियन का मत था कि, ''प्रेस अत्याचार, अन्याय और अदक्षता के खिलाफ एक सशक्त शस्त्र है''। नेपोलियन के इस विचार को अकबर इलाहाबादी ने इस रूप में व्यक्त किया है–

खींचो ना कमान को, न तलवार निकालो।
जब तोप मुकाबिल हो, तो अखबार निकालो।।

वर्तमान समय में जहाँ एक तरफ प्रेस हमें देश की राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक स्थितियों की जानकारी देता है, वही विदेशों में घटित घटनाओं और बदलते सामाजिक मूल्यों से भी अवगत कराता है। आज से ही नहीं, स्वतंत्रता संग्राम के प्रारम्भिक दौर से ही जनमानस में क्रांति की चेतना जागृत करने का वीणा प्रेस ने ही उठाया था। प्रेस की महत्ता पर बल देते हुए अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति थामस जैफरसन ने कहा था कि, ''यदि हमें सरकार युक्त किन्तु प्रेस विहीन राष्ट्र और प्रेस युक्त व सरकार विहीन राष्ट्र में से किसी एक को चुनना हो तो मैं बाद वाली व्यवस्था का ही चयन करूँगा''। वास्तव में समाचार पत्र या प्रेस लोकतंत्र का एक सशक्त पहरेदार है। इसके माध्यम से लोग इच्छा, विरोध, समर्थन व आलोचना सब कुछ प्रकट करते हैं, जो एक लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की महत्वपूर्ण विशेषता होती हैं। लोकतंत्र में व्यक्ति को अपनी भावनाओं को प्रकट करने की स्वतंत्रता होती है और जनमानस को यह स्वतंत्रता प्रेस के ही माध्यम से मिलती है। अतः किसी भी लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में प्रेस की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाती है। यही कारण है कि बड़े से बड़ा राजनेता, अभिनेता, शासक आदि सभी प्रेस से भयभीत रहते हैं।

वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के काल में प्रेस शब्द का अर्थ अति व्यापक हो गया है। आज प्रेस का अर्थ समाचार के समस्त साधनों, जिसे मीडिया कहते हैं, से लिया जाता है। दूसरे शब्दों में समाचार संवहन की वाहक गाड़ी के 'प्रिन्ट मीडिया' व 'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया' नामक दो पहिये हैं। पिछले कुछ वर्षों में प्रेस ने जन–जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। तहलका, बोफोर्स, 2-G स्पेक्ट्रम घोटाला, कॉमनवेल्थ घोटाला, कोयला ब्लॉक आवंटन घोटाला आदि बहुत से घोटालों का पर्दाफाश करने व इनमें संलिप्त नेताओं को बेनकाब करने में प्रेस ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। तहलका काण्ड के सन्दर्भ में किये गये पर्दाफास के संबंध में 'कलम के सिपाही' व 'वतन के सिपाही' की तुलना एक कवि ने बड़े सुन्दर ढंग से इन पंक्तियों के माध्यम से की है–

घरा बेच देंगे, गगन बेच देंगे,
कलि बेंच देंगे, कुसुम बेच देंगे।
कलम के सिपाही, अगर सो गये तो,
वतन के सिपाही, वतन बेच देंगे।

*एसोसिएट प्रोफेसर (शिक्षाशास्त्र) ईश्वर शरण डिग्री कालेज, इलाहाबाद।

आज वर्तमान में तहलका और बोफोर्स तो बहुत पुराने हो गये हैं। प्रेस व मीडिया ने अभी हाल के वर्षों में कई ऐसे अद्भुत कार्य किये हैं, जिससे सम्पूर्ण विश्व हत–प्रद है। अभी हाल में मिस्र में मोहम्मद मोर्सी के लम्बे शासनकाल व तानाशाही को समाप्त करने में मीडिया ने उल्लेखनीय भूमिका निभायी है। मिस्र व अरब के देशों में पिछले वर्षों सूचना संचार तकनीकी के माध्यम से जो क्रांति हुई, उसे 'सदाबहार क्रांति' की संज्ञा दी गयी। मिस्र में जनता ने मोहम्मद मोर्सी के लम्बे तानाशाही शासन की समाप्ति न तो तलवार के माध्यम से की, और न ही तोप के माध्यम से बल्कि जनता ने इलेक्ट्रानिक मीडिया और सोशल नेटवर्किंग साइट का प्रयोग करते हुये वहाँ एक रक्तविहीन क्रांति को जन्म दिया, जिसके परिणामस्वरूप मोहम्मद मोर्सी को मिस्र की गद्दी छोड़नी पड़ी। मिस्र में हुई यह क्रांति शीघ्र ही अफ्रीका महाद्वीप के कुछ देशों एवं अरब के देशों में फैल गयी। इस फैली हुयी क्रांति ने उन देशों में लम्बे समय से शासन करते आ रहे तानाशाही शासकों एवं राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था के प्रति विरोध का ऐसा बिगुल फूँका जिसके परिणामस्वरूप वहाँ लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ।

आज प्रेस व मीडिया का दायरा असीमित है। परन्तु प्रेस या मीडिया के असीमित अधिकारों से उसे अपने उत्तरदायित्वों से मुक्ति नहीं मिल सकती। यदि प्रेस चरित्र हनन या अवमानना आदि में संलग्न होता है या ऐसे लेख छापता है जिससे देश में साम्प्रदायिक या जातीय उन्माद भड़के तो प्रेस को भी दण्डित किया जा सकता है। समाचार पत्रों को अपने स्वतंत्रता के अधिकार का उपयोग करते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि बिना पक्षपात या पूर्वाग्रह के लोगों को सही स्थिति से अवगत कराये, जिससे राष्ट्र व समाज का सही अर्थों में हित हो। साथ ही प्रेस का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह भी है कि वह लोगों में सकारात्मक सोच व दृष्टिकोण को विकसित करे, जो किसी भी देश की उन्नति एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वर्तमान समय में हम जब भी समाचार पत्र को खोलते हैं तो उसके मुख्य पृष्ठ पर कहीं बलात्कार, कहीं युद्ध, कहीं हिंसा जैसी मुख्य घटनाओं को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है, जिससे उसकी लोकप्रियता बढ़े और दर्शक ज्यादा से ज्यादा उस खबर को पढ़कर उस समाचार पत्र की बिक्री को बढ़ायें। परन्तु इससे समाज में लोगों नकारात्मक दृष्टिकोण का विकास होता है, जो किसी भी सभ्य समाज के लिए उचित नहीं है। भारत के पूर्व राष्ट्रपति ए0पी0जे0 अब्दुलकलाम साहब ने इस्राइल के समाचार पत्रों का दृष्टांत प्रस्तुत करते हुये कहा कि– एक बार जब में इस्राइल में था, तब इस्राइल में इस्राइल व सीरिया के बीच युद्ध चल रहा था। युद्ध के इस दौर में जब उन्हें सुबह का समाचार पत्र पढ़ने को मिला तो उसके मुख्य पृष्ठ पर कहीं भी युद्ध का जिक्र नहीं था, बल्कि उसके मुख्य पृष्ठ पर इस्राइल के एक ऐसे नवयुवक का दृष्टांत था जिसने अपने अथक परिश्रम से किसी गाँव में निरक्षरता को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम ने कहा कि प्रेस का उद्देश्य समाज में सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना है न कि नकारात्मक।

यह माना जाता है कि मीडिया प्रयोग की वृद्धि एक तरह से समग्र राष्ट्रीय विकास की पहचान होती है। विशेषज्ञों की राय में कार्य कुशलता में वृद्धि मीडिया प्रयोग में वृद्धि के कारण होती है, और खासकर सेवाक्षेत्र में। जनमाध्यमों ने आमोद प्रमोद उद्योग को भी बढ़ावा दिया है। मीडिया के आदान–प्रदान ने आकाश द्वारा महाद्वीपों के आर–पार आक्रमण करना शुरू कर दिया है। इस हेतु उपग्रह माध्यम के स्लाट लिए गये हैं। हमारे दूरदर्शन ने भी अपनी सेवाओं को कई गुना विस्तारित कर दिया है। मीडिया की उपलब्धता लोगों के विचार जानने में सहायता करते हैं। यह नेताओं और जनता दोनों के लिए लाभकारी है। विकास की धारा में मनुष्य ने अपनेक प्रकार की वैज्ञानिक एवम् तकनीकी खोजें की। जिसके फलस्वरूप हमारे विचारों भावों के संचार हेतु नयी तकनीकों का विकास हुआ। इन्हीं तकनीकों के प्रोफेसर विलियम इस ब्यूरो के प्रथम निदेशक नियुक्त हुए। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद योजनाबद्ध जनसम्पर्क अस्तित्व में आया, अखबारों में वृद्धि हुई और उन्हें जनमत तैयार करने के सशक्त माध्यम के रूप में पहचाना गया। स्वतन्त्रता के बाद देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था के साथ विभिन्न क्षेत्रों में जनसम्पर्क प्रभागों की स्थापना की गयी। आज भारत में जनसम्पर्क ने अपनी विशिष्ट पहचान बना ली है। निजी एवं सहकारी क्षेत्रों में भी इसके महत्व को रेखांकित किया जाने लगा है।

राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जनमाध्यमों के सहयोग के लिए समाचार समितियों का गठन किया गया है। ये समितियाँ समाचारों के अढ़तिये के रूप में काम करती है। सामूहिक रूप से विस्तृत क्षेत्रों के समाचारों के संकलन संपादन और प्रसारण का कार्य इन समाचार समितियों द्वारा किया जाता है। इनके द्वारा समाचारों का संकलन तथा फीचर तथा लेख आदि समाचार माध्यमों को भेजा जाता है, साथ

ही स्थानीय घटना से लेकर आर्थिक व सामाजिक सभी खबरों को इन्हें महत्व देना पड़ता है। मीडिया ने समाज के स्वरूप को बदलकर रख दिया है।

यदि संचार माध्यम अपनी भूमिका निभाना बन्द कर दे तो हमारा हाल ठीक वैसा ही होगा जैसे कि हमारे शरीर की महत्वपूर्ण ज्ञानेन्द्रिय कान ने अपना कार्य करने से जवाब दे दिया है, अतः हम सभी अंगों से स्वस्थ रहने के बाद भी अपने पूर वजूद से परिचित नहीं हो सकेंगे। संचार माध्यमों से हमें विश्व में क्या घटित हो रहा है, उसकी जानकारी क्षण प्रतिक्षण मिलती रहती है, और हम भी अपने को उसी अनुरूप बनाये रखने में सक्रिय रहते हैं। सबसे अनिवार्य हमारे लिये खाद्यान्न, चिकित्सा व सुरक्षा है। इसके लिये पूरे विश्व में क्या चलाया जा रहा है, और क्या प्रयास हो रहे हैं, इसकी जानकारी मीडिया के द्वारा ही होती रहती है।

अतः कहा जा सकता है कि एक उत्तरदायी प्रेस राष्ट्र में सुख–शान्ति तथा कानून व्यवस्था बनाने और राष्ट्रीय एकता व अखण्डता कायम रखने में अद्वितीय भूमिका निभा सकता है। अतः एक लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में एक स्वतंत्र प्रेस अनिवार्य है।

संदर्भः–

1. दयाल, रघु (2010) : द सारी स्टेट ऑफ पब्लिक हेल्थ, द न्यूज 2 अप्रैल।
2. सिंह देवेन्द्र (1994) : दूरदर्शन एवं स्वास्थ्य शिक्षा भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष 13, अंक 1, जनवरी–जून भारतीय शिक्षा शोध संस्थान, निराला नगर, लखनऊ।
3. सच, जेफरी डी (2010) : टाइम टू फाइनेन्स, ए न्यू ग्लोबल हेल्थ फण्ड, दि हिन्दू, 22 मार्च।
4. पाण्डेय, शिवमोहन (1980) : राष्ट्रीय शिक्षा धारा के अन्तर्गत, अग्रवाल प्रेस, शिवचरण लाल रोड, इलाहाबाद।
5. मालवीय, राजीव शिक्षा के मूल सिद्धान्त, शारदा पुस्तक भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद।
6. शर्मा, आर0ए0 शिक्षा तकनीकी के तत्व एवं प्रबन्धन, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, निकट गवर्नमेंट इण्टर कालेज, मेरठ।
7. पाठक, पी0डी0, शिक्षा के सिद्धान्त, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
8. राही, राजेन्द्र (2001): आधुनिक रिपोर्टिंग, राही प्रकाशन, वाराणसी।
9. तिवारी, अर्जुन (2005) : जनसंचार और हिन्दी पत्रकारिता, जय भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
10. शर्मा, राधेश्याम (1988) : जनसंचार, हरियाणा साहित्य एकादमी, चण्डीगढ़।
11. जैन, रमेश (2003) : जनसंचार एवं पत्रकारिता, मंगलदीप प्रकाशन, जयपुर।